संस्कृत भाषा -अतीत से वर्तमान का सफर।

[1]दीपा कुशवाहा

शोध सारांश

एक शास्त्रीय भाषा के रूप में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका से न केवल भारत अपितु समस्त विश्व को चमत्कृत करने वाली संस्कृत प्राचीन सभ्यता और संस्कृत की गौरवगाथा तो प्रस्तुत करती ही है, किन्तु आज के विशुद्ध उपभोक्तावादी युग में जहाँ किसी भी विषय की उपयोगिता उससे प्राप्त हो सकने वाले रोजगारों की अधिकता पर निर्भर करती है।यद्यपि हमारे देश में किसी भी अन्य विषय की तरह संस्कृत के अध्येता भी जहाँ किसी खास विषय की विशेषज्ञता अपेक्षित नहीं है, उन सभी पारम्परिक वृत्तियों के लिए योग्य होते ही हूँ तथापि शिक्षण ही वह व्यवसाय है।

संपूर्ण भरतखण्ड में संस्कृत का वैभव रहा, जनसामान्य की घरेलू भाषा संस्कृत रही, विश्व की सबसे अधिक पर अत्युत्तम रचनाएं संस्कृत में हुई, लेकिन मालूम नहीं होता कि संस्कृत की कितनी शैक्षणिक संस्थाएं कितने संस्कृत विद्वान व छात्र थे। यह विपर्यास नहीं तो और क्या है ? सच्चा इतिहास अपरिवर्तित होता है। इसलिये अब हमारा कर्तव्य है कि संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिये इतिहास में क्या किया गया।

मूल शब्द: संस्कृत, शास्त्रीय भाषा, इतिहास, वर्तमान

Corresponding author

[1]शोध छात्रा, डॉ. भीमराव आम्बेडकर विश्वविद्यालय, आगरा। ईमेल kushwahadeepa722@gmail.com

प्रस्तावना

संस्कृत भाषा प्राचीन से प्राचीन एवं नयी से नयी कही गई है। संस्कृत भाषा को देवभाषा के रूप में प्रतिष्ठित कर जनभाषा होने के बीच एक दूरी पाट दी गई। साथ ही साथ लोक में इसके समृद्ध रूप को उजागर न करके दुरुह व्याकरण के भय का प्रसार किया गया। जिससे समाज से इसकी दूरी बता कर एक विशिष्ट वर्ग की भाषा घोषित कर दी गई और यत्र-तत्र इसे मृतभाषा घोषित किया जाने लगा। स्वतंत्रता संग्राम में संस्कृत की

भूमिका अग्रणी रही है। यह रचनाधर्मिता में अन्य भाषाओं से कम नहीं रही है। 'वन्दे मातरम् ' रचना इसका उत्तम उदाहरण है। जो संस्कृत भाषा रचनाधर्मिता में विश्व पटल पर विख्यात रही वह स्वतंत्रता के पश्चात् अन्य विधाओं में भी नवाचार रूप में प्रस्तुत हुई। मनोरंजन के क्षेत्र में थियेटर, सिनेमा, दूरदर्शनादि में इस भाषा को प्रतिष्ठा हासिल हुई।

स्वतन्त्रता के पश्चात् भारतवर्ष ने न केवल विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नये कीर्तिमान स्थापित किये अपितु संस्कृति और संस्कृत के उन्नयन में भी अपनी कीर्ति पताका को समुज्ज्वल व्योम प्रदान किया, देवभूमि उत्तराखण्ड भारत का वह राज्य है जिसने सर्वप्रथम संस्कृत भाषा को राज्य की द्वितीय राजभाषा का स्थान दिया और अपने स्थापना वर्ष 2000 से निरन्तर संस्कृत भाषा को पुनर्स्थापित करने के लिए प्रयासरत है। उदाहरण के लिये उच्चशिक्षा पर दृष्टिपात करते हैं यद्यपि गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय स्वतन्त्रता पूर्व से ही संस्कृत को समर्पित अध्ययन केन्द्र है, तथापि राज्य द्वारा अनेक विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों की स्थापना केवल संस्कृत को ही आधार बनाकर की गई हैं, जिनमें पारम्परिक तथा आधुनिक दोनों तरह की विद्याओं के अध्ययन के साथ कई शोधपरक कार्यों का क्रियान्वयन किया जाता है। राज्य में कुछ ग्रामों को संस्कृत ग्राम घोषित किया गया है जिससे आगामी वर्षों में जनमानस संस्कृत भाषा से परिचित हो सकें। इसके अतिरिक्त संस्कृत संगोष्ठियों, गीत, नृत्य और नाटकों के माध्यम से अजस्ररूपेण संस्कृत का प्रचार प्रसार किया जाता है।स्वतंत्र भारत में संस्कृत शिक्षा को और अधिक बढ़ावा तभी मिलेगा जब पुस्तकों में सीमित विद्या को जितने ही नवीनतम विधियों, टेक्नालाजी के माध्यम से दिया जाये उतना ही अधिक प्रचार-प्रसार हो सकेगा।

संस्कृत भारती के स्तुत्य प्रयासों से आज देश तथा विदेशों में संस्कृत भाषियों की संख्या में उत्तरोत्तर वृद्धि देखी जा रही है और इसके चलते जनमानस में संस्कृत के प्रति धारणा और सकारात्मक हुई है। अनेक स्थलों पर अब संस्कृत विद्यार्थियों की संख्या में गुणात्मक सुधार दिखाई दे में रहा है। ऐसी स्थिति में संस्कृताध्ययन जनित आजीविकाओं पर विचार करना नितान्त प्रासंगिक है, क्योंकि सामान्यतः विद्यार्थी विषय का चयन भावना के आवेश में नहीं अपितु अर्थप्राप्ति को केन्द्र में रखकर करते हैं।

फ्रांस, जर्मनी, इटली यहाँ तक की डेनमार्क, स्वीडेन तथा रूस में भी लोगों के मन में भारत नाम के प्रति एक विशेष प्रकार का मोह है, आकर्षण है। जर्मनी में तो जो विद्वान् संस्कृत साहित्य का अध्ययन करता है, वह

प्राचीनों की ज्ञान गरिमा एवं उनके रहस्य ज्ञान का अधिकारी समझा जाता है। लोग उसके सामने श्रद्धा से सर झुकाते हैं तथा विद्वानों की श्रेणी में उसका विशेष आदर होता है।

संस्कृत वाङ्मय मानव के प्रादुर्भाव काल से ही उसकी पथ प्रदर्शिका एवं मोक्षदायिका के रूप में लिपिबद्ध है। संस्कृत वाङ्मय की विकास यात्रा को जिस प्रकार से हमारे प्राचीन कवियों, ऋषियों, महर्षियों ने अपने अदभुत ज्ञानधारा के द्वारा पूर्ण किया है, उसी विकास यात्रा को भारत की स्वतंत्रता के पश्चात् भी आधुनिक संस्कृत आचार्यों एवं मनीषियों के द्वारा भी पूर्णोत्साह के साथ आगे प्रवर्तित किया गया।

संस्कृत भाषा जितनी अधिक प्रासंगिक अपने प्रारंभिक काल में रही होगी कालान्तर में वह और उपयोगी होती गयी। पराधीन भारत में संस्कृत भाषा अवश्य उपेक्षित हुई पर स्वतंत्र भारत में उसे पुनर्प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है। यदि हमें भारत को पुनः विश्वगुरु बनाना है, तो संस्कृत भाषा के तकनीक एवं विज्ञान को पुनः लोकप्रिय बनाना पड़ेगा। प्राचीन काल में संस्कृत भाषा में वर्णित तकनीक एवं विज्ञान के संदर्भ अनेक पुस्तकें पढ़ने को मिल जायेंगी। अब नये भारत ने आजादी के पश्चात् संस्कृत को नयी दृष्टि से समकालीन प्रासंगिकता की दृष्टि से निरखना और परखना प्रारंभ किया है। विश्व प्रसिद्ध विज्ञान पत्रिका फोर्ब्स ने जुलाई 1987 के अंक में प्रकाशित किया कि संस्कृत साफ्टवेयर कम्प्यूटर के लिए सर्वाधिक उपयुक्त भाषा है। फोर्ब्स पत्रिका की यह भी मान्यता है कि संस्कृत सभी यूरोपीय भाषाओं की जननी है। यदि संस्कृत को सामान्य जन तक पहुंचा दिया जाय तो एक वैज्ञानिक प्रगति की क्रान्ति आ सकती है।

संस्कृत भाषा ही सम्पूर्ण देश को भाषाई एकता के सूत्र में बांध सकने वाली इकलौती भाषा है। स्वतंत्रता के समय भारत में संस्कृत वि० की संख्या मात्र दो थी जो आज 18 तक पहुँच चुकी है और आज अनेको गैर-सरकारी संस्थाएँ संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार में श्री वृद्धि कर रही है तथा दिन-प्रतिदिन संस्कृत छात्रों की संख्या में भी वृद्धि हो रही है। आज संस्कृत भाषा की विकास यात्रा का मूल्यांकन इस बात से स्वयं सिद्ध हो जाता है कि सन् 1987 ई में ही संस्कृत भाषा की वैज्ञानिकता का अध्ययन करके अनुसंधान संस्था 'नासा ' द्वारा संस्कृत के लिए सर्वोत्तम भाषा घोषित कर दिया था। जिस कारण आज संसार की सभी संस्थाएँ संस्कृत भाषा में शोध कर रहीं हैं।

स्वतंत्रता के बाद की स्थिति देखी जाये तो आज संस्कृत की हालत पूर्व काल की तुलना में बद से बदतर हो चली हो चली है सरकार का भी इस भाषा को संरक्षित रखने अथवा इसको बचाये रखने के लिये कोई सार्थक प्रयास नही किया जा रहा है। संस्कृत साहित्य मानव सभ्यता के प्राचीन इतिहास से जुड़ी विश्व की प्राचीन भाषा है जो

कि आधुनिक भाषा के रूप में सर्वथा सार्थक है। संस्कृत भाषा को लोकप्रिय एवं हर व्यक्ति के जीवन की आवश्यकता बनानी चाहिए तभी लोग संस्कृत के प्रति अपना उत्साह दिखाएंगे। आज के भौतिकवादी युग में संस्कृत भाषा को सबसे विषम परिस्थितियों का सामना करना पड़ रहा है परन्तु हमेशा ही आम लोगों के प्रोत्साहन एवं विश्वास के कारण यह समृद्ध भाषा रही है। संस्कृत को संस्कृत भाषा के माध्यम से ही पढ़ाना चाहिए। छात्रों में संस्कृत शिक्षा के प्रति लगाव बढ़ाने के लिए संस्कृत को सरल एवं लोकप्रिय पाठ्यक्रम सामग्री से युक्त किया जाना चाहिए। शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक एवं प्रयोगात्मक शिक्षा का महत्व बढ़ता जा रहा है।

संस्कृत भाषा से अन्य सभी भाषाओं की उत्पति मानी जाती है। भारत के संविधान के अनुच्छेद 251 में स्पष्टतः उल्लेख है कि 'हम भारतीय भाषाओं को सशक्त करेंगे और भारतीय भाषाओं के विकास और समृद्धि के लिए संस्कृत अहम भूमिका निभाएगी।'

डॉ. आंबेडकर और कई नेताओं ने संस्कृत को राष्ट्रभाषा बनाने का प्रयत्न किया था, क्योंकि संस्कृत को सदैव संपूर्ण भारतवर्ष की भाषा जाना जाता था। जवाहरलाल नेहरू जैसे पश्चिम-प्रेमी भी मानते थे कि भारत की सबसे गौरवशाली विरासत संस्कृत भाषा और उसमें उपलब्ध महान साहित्य है, परंतु दुर्याेगवश केवल एक वोट से संस्कृत राष्ट्रभाषा बनने से रह गई। स्वयं आंबेडकर के कुछ अनुयायियों ने संस्कृत का विरोध किया था। उन्हें अपनी भूल का एहसास तब हुआ जब हिंदी के विरुद्ध दूसरी भारतीय भाषाओं को उभारने की राजनीति सरलता से सफल हो गई। इससे अंग्रेजी को स्थायी रूप से पांव जमाने-पसारने का उपाय हो गया। उसी का दुष्परिणाम है कि आज सभी भारतीय भाषाएं, स्वदेशी ज्ञान और साहित्य हमारी नई पीढ़ियों से छूटता जा रहा है। आज भी देश के कोने-कोने में संस्कृत के प्रति प्रेम और श्रद्धा है। लोग जानते हैं कि भारत की प्रतिष्ठा संस्कृत से ही रही है। भाषा और संस्कृत के अभिन्न् संबंध को न समझ पाने और क्षुद्र स्वार्थों की राजनीति प्रबल हो जाने से स्वतंत्र भारत में भारतीय भाषाओं की वह दुर्गति हो रही है, जो विदेशी शासनों में भी नहीं हुई।

कुछ लोग संस्कृत को मृत भाषा करार देते हुए कहते हैं कि एक प्रतिशत भारतीय भी संस्कृत नहीं बोलते। वह तो अधिकांश पंडितों, पुरोहितों द्वारा प्रयोग की जाती है, परंतु दोनों ही बातें अतिरंजित हैं। संस्कृत की महत्ता दूसरी है। तुलना में देखें तो लैटिन भाषा भी मृत हो चुकी। वह किसी देश में मातृभाषा नहीं है, पर आज भी यूरोप में लैटिन पढ़ना न केवल सम्मानजनक, बल्कि सुशिक्षित होने की शर्त जैसा है। भारत में संस्कृत के लिए वही स्थिति बनाना और आसान है। संस्कृत में उपलब्ध साहित्य और ज्ञान आज भी देश के कोने-कोने में किसी न

किसी रूप में जाना जाता है। आवश्यकता केवल इसकी है कि शिक्षा के प्रति गलत अवधारणा को सुधार लिया जाए।

भाषा के भविष्य की यदि बात की जाए तो इसका अर्थ उस भाषा की वस्तुस्थिति से होता है उसके विकास से होता है, उसके विकास से होता है,उसके प्रयोक्ताओं से होता है, उनकी संख्याओं से होता है, उससे मिलने वाले रोजगार से होता है, उसके प्रति लोगों के रूझानसे होता है। संस्कृत एक अति प्राचीन एवं उन्नत भाषा है। इसके साथ ही यह एक वैज्ञानिक भाषा भी है। वैश्विकरण के बाजार में आज जहां भाषाओं के मरने का क्रम जारी है वहां संस्कृत एकमात्र ऐसी भाषा है जो विश्वपटल पर उभर कर तेजी से फैल रही हैं। यनूेस्को द्वारा 2009 में प्रकाशित एक प्रतिवेदन के अनुसार भारत की 9 भाषाएँ मर चुकी हैं और 196 भाषाएँ मरणासन्न स्थिति में हैं। अमेरिका की 53 भाषाएँ मर चुकी है और 71 भाषाएँ मरणासन्न हैं। इस प्रकार विश्व की लगभग 7000 भाषाओं पर खतरा मंडरा रहा है। जहाँ तक संस्कृत भाषा का प्रश्न है। यह एक अति प्राचीन एवं उन्नत भाषा है।

हमारे देश की प्रायः सभी आधुनिक भाषाएँ संस्कृत से जुडी हैं। हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगला, ओड़िआ, असमिया, पंजाबी, सिन्धी आदि भाषाएँ भी इससे विकसित संस्कृत भाषा की उत्पत्ति origin of Sanskrit language संस्कृत साहित्य का इतिहास history of Sanskrit literature संस्कृत हिंदू धर्म की प्राथमिक पवित्र भाषा है, आज भी हिंदू धार्मिक अनुष्ठानों, बौद्ध भजनों और मंत्रों और जैन ग्रंथों में उपयोग किया जाता है।

संस्कृत भाषा के स्वरूप में समय-समय पर विविधता आई जैसेः- ऋग्वेद की भाषा वैदिक संस्कृत है और रामायण की भाषा लौकिक संस्कृत है। जो कि वैदिक संस्कृत से भिन्न है। संस्कृत भाषा के विकास स्तरों की दृष्टि से अनेक विद्वानों ने अनेक रूप से इसका ऐतिहासिक कालविभाजन किया है। राज्य एवं केन्द्र सरकार की देखे तो वर्तमान परिस्थिति में मानों जैसे संस्कृत की अवहेलना सी ही कर रही है, परन्तु कुछ राज्यों में संस्कृत की रक्षा के लिये उसके भरण पोषण के लिये संस्कृत के क्षेत्र एवं संस्कृत भाषा के संरक्षण के लिये किये जा रहे कार्यों के लिये विभिन्न आयोजन करके समाज और कार्य करने वालों को पुरस्कृत भी किया जा रहा है उन्हे सम्मानित करके गौरवान्वित किया जा रहा है।

निष्कर्ष

5000 वर्षों से पूर्व तक की ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक निधियों को सँजो कर रखने वाली संस्कृत भाषा का विकास तथा व्यापक प्रचार-प्रसार भारतीय उपमहाद्वीप में हुआ, जहाँ इसे शिखर पर ले जाने का कार्य पाणिनी, पतञ्जलि, भास, कालीदास आदि मूर्धन्य विद्वत्जनों ने किया । तक्षशिला, काशी, उज्जयिनी,

नालन्दा, वल्लभी, विक्रमशिला, काँचीपुरम जैसे संस्कृत भाषा-अध्ययन केन्द्रों की तात्कालीन विद्यमानता इस भाषा की पराकाष्ठा एवं प्रतिष्ठा के स्तर को जानने समझने के लिये पर्याप्त मानी जाती है। संस्कृत भाषा की इन्हीं महत्ताओं एवं प्रासंगिकताओं के कारण विश्व में बोली जाने वाली अन्य सभी भाषाओं के मध्य यह आज भी अपना विशेष स्थान रखती है। संक्षिप्त रूप से अपनी इन्हीं विशिष्टताओं के कारण संस्कृत भाषा का अध्ययन, अध्यापन न केवल हमारे देश में ही अपितु विश्व के अनेक देशों में चलायमान है।

संदर्भः-

1.आधुनिक संस्कृत साहित्य का इतिहास-प्रो राधावल्लभ त्रिपाठी।

2. संस्कृत साहित्य का इतिहास।

3. आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संस्कृत की उपयोगिता व वैज्ञानिकता।

4. भारतीय आचार्या का भाषा चिंतन।

5. कुछ जानकारी गूगल के माध्यम से संकलित।